लोगों का जीवन अत्यंत शोचनीय है। उपन्यास का मुख्य पात्र है काली, जिसके परिवार को घोर गरीबी में ज़िन्दगी काटना पड़ता है। काली का भाई सोचता है- यह भादों की पहली सुबह है, बादलों से घिरी मनहूस सुबह। घुटनों में सिर गड़ाए सोचता है बिसराम, किसका सराप पड़ा है इस घर पर? पहले चीनी मिलें बंद हुईं, फिर खेत बंधक हुए, भैंस गई, मेहरारू मरन सेज पर और बेटी को सांप ने डॅसा।

गाँव की गरीबी का चित्रण डीएसपी कुमार इस प्रकार करते हैं- आबादी की सघनता धीरे-धीरे कम होती गयी। अब पक्के मकान एक भी न थे, ये सिर्फ फूस के घरौंदे या खपरैल वो भी दूर दूर। दूर से झाँकते स्त्री-पुरुष, बच्चे जीप के पास आते ही कछुए की तरह गर्दन घुसेड़ लेते। लुंगी, गमछे, धोती, भगवे में लोग देश के आम गाँवों से ज़्यादा दरिद्र, ज़्यादा बीमार, ज़्यादा निरीह, औरतें अपेक्षाकृत बेहतर थीं।

प्रस्तुत उपन्यास में एक ओर बिसराम जैसे गरीब मनुष्य हैं, जिनके पास मृत बेटी का क्रियाकर्म करने के लिये भी पैसे नहीं, दूसरी ओर दुबे जैसे मंत्री हैं, जो लाखों रुपये अपनी संतान के विवाह पर खर्च कार देते हैं। गाँववालों की गरीबी और उच्चवर्ग की अमीरी का चित्रण उपन्यासकार ने इस प्रकार किया हैः. चन्द्रदीप सिंह का गाँव। दरिद्रता का आलम ओढ़े, थारुओं और धांगडों के गाँव, जहाँ-तहाँ पेड़ और झाड़ियाँ, शेष सूखे की मार से कराहती धरती। उस पहली बरखा से आशा के जो बिरवे पनपे थे, फिर से कुम्हलाने लगे थे। इस धरती पर भी कब्जा किसका है? जवाब की तरह खड़ी थी गाँव के बीच चन्द्रदीप सिंह की हवेलीनुमा बखरी।... दो ट्रैक्टर अलग-अलग दिशाओं की ओर से बखरी की ओर लौट रहे थे। पंक्तिबद्ध पक्की नादों की कतार, भैंसें, गायें, चार बैल। पहले बैठका, मिडिल स्कूललुमा फिर सामने दोमंजिली हवेली।

जो लोग लूट, हत्या, बलात्कार आदि का मार्ग नहीं चाहते हैं, परिस्थितिवश इस ओर खिंचे जाते हैं। एक बार इस जंगल में प्रवेश करें तो इसमें वे उलझ जाते हैं। बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है। पर काली तो सामाजिक अन्याय और शोषण की प्रतिक्रियास्वरूप डाकू बनता है। यद्यपि कुमार काली को शोषण के विरुद्ध क्रांति करने की प्रेरणा देता है, फिर भी वह डाकू बनता है। क्योंकि उसे डाकू परशुराम द्वारा अपनी भौजाई के साथ किये गये बलात्कार और पुलिस द्वारा भी बिसराम की हत्या का बदला लेना ज़रूरी लगता है।

पुलिस और प्रशासक पूँजीपतियों के सहायक बनते हैं और गरीब और आदिवासियों के प्रति बेरुखी दिखाते हैं। लेखक के शब्दों में- मंत्री की हैसियत का फायदा उठाकर दुबेजी ने गोकुल और बिन्दा की रक्षा की और परेमा को नेपाल भाग जाने पर मज़बूर किया। यही हैसियत लल्लन बाबू की होती तो खेल उल्टा होता।

पुलिस पैसे लेकर सही को झूठ और झूठ को सही में बदल देती है। डाकू भ्रष्ट व्यवस्था से परिचित हैं। जनता भी पुलिस से अधिक, डाकू पर विश्वास करती हैं। डाकू लोग गरीबों को कम सताते हैं और अमीरों को लूटते हैं। पूरा इलाका डाकू का साथ देता है। डाकू परशुराम की जीत प्रजातंत्र पर कड़ा तमाचा है। कुमार जैसा ईमानदार अफसर डाकू उनमूलन हेतु सामाजिक आर्थिक और भूमि सुधारों की बात करता है। पर उसका समर्थन कोई नहीं करता। उपन्यासकार सफेदपोश मंत्रियों की भी पोल खोलते हैं। मंत्री दुबेजी का विचार है कि रंडी और गुंडा से दोस्ती करने के लिये रात का अंधेरा ही अच्छा है।

प्रस्तुत उपन्यास में संजीवजी ने भौगोलिक स्थितियों का स्पष्ट चित्रण मुख्य रूप से थारू जाति की रस्म, जन जीवन आदि का साफ चित्रण किया है। यह भी दिखाया गया है कि उच्च जाति की पंचायत, नीच जाति के लोगों को उचित न्याय नहीं देती। फिर भी इन लोगों को पंचायत के निर्णय को भगवान का निर्णय समझकर स्वीकार करना पड़ता है। जंगल जहाँ शुरु होता है में लोककथाएं, लोकगीत, पर्व-त्योहार, मेले, लोक विश्वास, स्थानीय बोली, मृतक संस्कार, अंध विश्वास, रूढ मान्यतायें आदि के अनेक चित्र मिलते हैं। इन पर्व त्योहारों से अखंडता, समभावना, मानवतावाद, भाईचारा आदि बढ़ते हैं।

बलि प्रथा का चित्रण भी उपन्यास में मिलता है। सहोदरा माई के थान पर मेले में लोग पूजा के लिये आते हैं। वहाँ कई लोग अपनी सामर्थ्य के अनुसार मंदिर में भेंट चढ़ाते हैं और मनोकामना पूरी करने के लिये पशु पक्षियों की बलि चढ़ाते हैं। उपन्यास में ठेकेदार द्वारा शोषण का शिकार बने काली नामक थारू युवा का चित्रण है। जब काली मज़दूरी माँगता है, तो टरकराया जाता रहा- ठेकेदार ने हाथ ही छोड़ दिया उस पर। किसी ने भी उसका साथ न दिया। उल्टे उसी को भला-बुरा कहने लगा, उसे ही माफी माँगनी पड़ी। ये शब्द स्पष्ट करते हैं कि ठेकेदार गरीबों का आर्थिक शोषण ही नहीं, मानसिक और शारीरिक शोषण भी करते हैं।

डाकुओं का सफाया करने के लिये जो सरकार ऑपरेशन ब्लैक पाइथन शुरू करती है, वह डाकुओं के बल पर ही सत्ता में आई है। न्याय व्यवस्था में भ्रष्टाचार का चित्रण संजीवजी ने अत्यंत प्रभावी ढंग से किया है। प्रस्तुत उपन्यास में काली अपने भाई बिसराम से मुकदमे के बारे में पूछता है तो बिसराम उत्तर देता है- फिर तारीख पड़ गयी। फिर कुछ दिन के बाद बिसराम के पूछने पर काली उत्तर देता है- इस बार तो कोरट ही नहीं बैठी। पुलिस की तानाशाही से डरकर गाँव छोड़ने वालों का चित्रण भी संजीवजी ने किया है। मलारी पुलिस के डर से गाँव छोड़कर भटकते समय काली से मिलती है। वह आदिवासियों की स्थिति को स्पष्ट करते हुए काली से कहती है - जबसे गाँव उजड़ गया। हम सब जान लेके भागे फिर रहे हैं। रोज़ रोज़ का अतियाचार जुलुम। ये आदिवासी पुलिस पर नहीं, डाकू पर विश्वास रखते हैं। मलारी आगे कहती है- डाकू का विश्वास कर लेना, लेकिन किसी हाकिम का विश्वास मत करना। संक्षेप में कहा जा सकता है कि जंगल जहाँ शुरु होता है, ऐसा उपन्यास है, जो जंगल को प्रतीक मानकर मनुष्य और समाज के अंदर स्थित जंगल को उजागर करता है। इसका कथ्य अत्यंत मौलिक है। प्रस्तुति भी सशक्त है। उपन्यास का मुख्य कथ्य आज के युग में होनेवाले अपराध का राजनीतिकरण और राजनीति का अपराधीकरण है। उपन्यास को पढ़कर सारी व्यवस्था पर करारी चोट करने का भाव उत्पन्न होता है। यह उपन्यास आंचलिकता में भीगा हुआ है। उपन्यासकार की संवेदनशीलता और जागरूकता हर कहीं प्रकट है। उनकी जनपक्षधरता की झलक भी प्रस्तुत उपन्यास में स्पष्ट है। ■